

जैन धर्म की भाषा एवं साहित्य पर प्रकाश

जैन धर्म का विकास प्राचीन भारत में हुआ, इसलिए इसकी भाषा और साहित्य पर भारतीय भाषाओं का गहरा प्रभाव पड़ा। जैन आचार्यों ने धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए जनभाषाओं का उपयोग किया ताकि आम जनता तक उपदेश आसानी से पहुँच सके।

1. जैन धर्म की भाषा

जैन धर्म की प्रमुख भाषाएँ प्राकृत, अर्द्धमागधी, संस्कृत, और बाद में अपभ्रंश तथा कन्नड़ रही हैं।

अर्द्धमागधी प्राकृत को जैन धर्म की धार्मिक भाषा माना गया है, क्योंकि भगवान महावीर ने अपने उपदेश इसी भाषा में दिए थे।

बाद में संस्कृत का प्रयोग विशेष रूप से दिगंबर आचार्यों ने किया, जबकि श्वेतांबर परंपरा में प्राकृत का अधिक उपयोग हुआ।

मध्यकाल में जैन लेखकों ने अपभ्रंश और कन्नड़ भाषाओं में भी विपुल साहित्य रचा।

2. जैन साहित्य

जैन साहित्य को मुख्यतः दो भागों में बाँटा गया है —

1. आगमिक साहित्य (Canonical Texts):

ये ग्रंथ भगवान महावीर की शिक्षाओं पर आधारित हैं। प्रमुख ग्रंथों में आचारांग सूत्र, सूत्रकृतांग, उत्तराध्ययन सूत्र, आदि शामिल हैं। ये ग्रंथ जैन आचार, दर्शन और अनुशासन की जानकारी देते हैं।

2. अनागमिक या टीकाग्रंथ (Non-canonical Works):

बाद के आचार्यों जैसे उमास्वाति, कुंदकुंदाचार्य, हरिभद्र, और हेमचंद्र आदि ने दर्शन, व्याकरण, और नीतिशास्त्र पर अनेक ग्रंथ लिखे।

उमास्वाति का तत्त्वार्थसूत्र जैन दर्शन का मानक ग्रंथ है।

आचार्य हेमचंद्र ने त्रिशष्टीशल्यपुरुषचरित्र और अभिधानचिन्तामणि जैसे प्रसिद्ध ग्रंथ लिखे।

3. जैन साहित्य का योगदान

जैन साहित्य ने न केवल धार्मिक विचारों का प्रसार किया, बल्कि भारतीय भाषा, व्याकरण, काव्य और नीतिशास्त्र को भी समृद्ध किया। जैन कवियों और आचार्यों ने लोकभाषाओं के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

निष्कर्षतः, जैन धर्म का भाषा एवं साहित्य भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का अमूल्य हिस्सा है, जिसने धर्म, दर्शन, साहित्य और भाषा — चारों क्षेत्रों में अमिट छाप छोड़ी।